ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

माया-मुक्त ब्राह्मण जीवन के लिए

परमात्म इशारे

निमित्त बनना आसान नहीं होता।
निमित्त शब्द ही आसान है ...
क्योंकि या तो आत्मा जिम्मेवारी ले लेती है,
या फिर बिल्कुल ही छोड़ देती है।
निमित्त अर्थात् करते हुए मन-बुद्धि से छोड़ देना ...
यह है निमित्त बनना।
निमित्त अर्थात् कहाँ करना है और कहाँ छोड़ना है ...
इसका balance रखना।

Peace of Mind

CH. 1221 d2h | CH. 1087 dishtv | CH. 1065 TATA PLAY | CH. 678 airtel digital TV | CH. 496 SUN DIRECT

हम सोचते हैं मन में हम जो भी सोचें किसी को क्या पता चलता है ? अरे नहीं ! शायद आप यह नहीं जानते कि विचार से ही आपके बोल और कर्म बनते हैं, आपके विचारों का एक न एक दिन आपके बोल और कर्मों के द्वारा प्रत्यक्ष होना निश्चित है इसलिए यदि बोल, कर्म और व्यक्तित्व को महान रखना है विचारों में श्रेष्ठता सदा बनी रहे !...@shiva

इच्छा-अच्छा कर्म समाप्त कर देती है। इसलिए इच्छा मात्रम अविद्या बनो।

Avyakt Murli - 27-11-78

/AvyaktMurliEssence

श्रेष्ठ प्रेरणा

बदले की भावना हमारे जीवन को परेशानियों से भर देती है और सभी के प्रति शुभ भावना हमारे जीवन को खुशियों से भर देती है... इसलिए किसी के प्रति भी बदले की भावना को शुभ भावना में बदलें और अपने जीवन को खुशहाल बनाएं।

Download App - Learn Rajyoga Meditation

SAMARPAN

ब्राह्मण जीवन में किसका संस्कार करते हो? शरीर तो वही है। लेकिन पुराने संस्कारों, पुरानी स्मृतियों का, स्वभाव का संस्कार करते हो तब मरजीवा कहलाते हो। जब संस्कार कर लिया तो पुराने संस्कार कहाँ से आये। अगर संस्कार किया हुआ मनुष्य फिर से आपके सामने आ जावे तो उसको क्या कहेंगे? भूत कहेंगे ना। तो यह भी पुराने संस्कार, किये हुए संस्कार अगर जागृत हो जाते तो क्या कहेंगे? यह भी माया के भूत कहेंगे ना। भूतों को भगाया जाता है ना। वर्णन भी नहीं किया जाता है। यह पुराने संस्कार कह करके अपने को धोखा देते हैं। अगर आपको पुरानी बातें अच्छी लगती हैं तो वास्तविक पुराने ते पुराने आदिकाल के संस्कारों को याद करो। यह तो मध्यकाल के संस्कार थे। यह पुराने ते पुराने नहीं हैं। मध्य को बीच कहते हैं तो मध्यकाल अर्थात् बीच को याद करना अर्थात् बीच भंवर में परेशान होना है। इसलिए कभी भी ऐसी कमज़ोरी की बातें नहीं सोचो। सदा यही दो शब्द याद रखो - बालक सो मालिक। बालक पन ही मालिकपन स्वत: ही स्मृति में लाता है। बालक बनना नहीं आता?

बालक बनो अर्थात् सभी बोझ से हल्के बनो। कभी तेरा कभी मेरा, यही मुश्किल बना देता है। जब कोई मुश्किल अनुभव करते हो तब तो कहते हो - तेरा काम तुम जानो। और जब सहज होता है तो 'मेरा' कहते हो। मेरा-पन समाप्त होना अर्थात् बालक सो मालिक बनना। बाप तो कहते हैं बेगर बनो। यह शरीर रूपी घर भी तेरा नहीं। यह लोन मिला हुआ है। सिर्फ ईश्वरीय सेवा के लिए बाबा ने लोन दे करके 'ट्रस्टी' बनाया है। यह ईश्वरीय अमानत है। आपने तो सब कुछ तेरा कह करके बाप को दे दिया। यह वायदा किया ना वा भूल गये हो? वायदा किया है या आधा तेरा आधा मेरा। अगर तेरा कहा हुआ मेरा समझ कार्य में लगाते हो तो क्या होगा। उससे सुख मिलेगा? सफलता मिलेगी? इसलिए अमानत समझ तेरा समझ चलते तो बालक सो मालिक बन के खुशी में, नशे में स्वत: ही रहेंगे समझा! एक यह पाठ सदा पक्का रखो। पाठ पक्का किया ना या अपने-अपने स्थानों पर जाकर फिर भूल जायेंगे, अभूल बनो।--09-12-1985

Everytime
you are kind,
you add a
divine spark
of light in
the world.
BRAHMA KUMARIS
facebook.com/brahmakumaris | youtube.com/brahmakumaris

If we want to forgive someone,
Family and friends may say,
"Don't do it till they apologize"

THEY advice through THEIR sanskars.
It is their truth and their right.
"What is right for me?"

Right is what creates peace of mind.
Right is what creates health.

MY DECISION - MY KARMA - MY DESTINY

BKShivani

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org